

डॉ. रॉबर्ट वानॉय, किंग्स, व्याख्यान 13

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

एलिय्याह और मुक्तिदायक इतिहास उपदेश

समीक्षा: अनुकरणीय और मुक्तिदायक ऐतिहासिक उपदेश

हमारे पिछले सप्ताह में हमने सैद्धांतिक तरीके से, पुराने नियम के ऐतिहासिक आख्यानो पर उपदेश देने के प्रश्न पर चर्चा की। लेकिन आप शायद कह सकते हैं कि हमने जो चर्चा की वह आम तौर पर पुराने या नए नियम के ऐतिहासिक आख्यानो पर उपदेश पर लागू होगी। आप बाइबल में ऐतिहासिक आख्यानो को समलैंगिकता में कैसे मानते हैं? जैसा कि आप याद करते हैं, हमने दो तरीको पर चर्चा की, मुख्य रूप से रूपक दृष्टिकोण को खारिज कर दिया। हमने तब अनुकरणीय या उदाहरणात्मक दृष्टिकोण बनाम मुक्तिदायी ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर चर्चा की। मुझे नहीं लगता कि ये दोनों दृष्टिकोण परस्पर अनन्य हैं। अर्थात्, निश्चित रूप से मुझे लगता है कि हमारे अपने जीवन के लिए पुराने नियम के विश्वासियों के जीवन में चित्रण और उदाहरण ढूढना वैध है। हालाँकि, अगर हम इतना ही करते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि हमने पुराने नियम के ऐतिहासिक आख्यानो के साथ न्याय किया है क्योंकि बाइबिल का इतिहास, चाहे वह पुराना हो या नया नियम, मूल रूप से मुक्ति के बारे में है। इतिहास मौजूद होने का कारण यह है कि यह हमें बताता है कि ईश्वर रहस्योद्घाटन और मुक्ति लाने के लिए इतिहास में क्या कर रहा था। फिर, मुझे ऐसा लगता है कि अगर हम यह कहने जा रहे हैं कि इन ऐतिहासिक आख्यानो में भगवान हमसे क्या कह रहे हैं, तो हमें उस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखना होगा जब हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि इन आख्यानो का महत्व क्या है।

रिडेम्प्टिव ऐतिहासिक दृष्टिकोण के माध्यम से एलिजा अब, जैसा कि मैंने पिछले सप्ताह उल्लेख किया था, मैं इस सप्ताह जो करना चाहता था वह एलिजा पर इन कथाओं में से कुछ के लिए दृष्टिकोण की एक विधि को चित्रित करने का प्रयास करना था जो रिडेम्प्टिव ऐतिहासिक महत्व को उजागर करेगा। मेरा मतलब एक किताब लाना था। यह आपकी ग्रंथ सूची पर है यदि आपके पास

अभी भी वह ग्रंथ सूची है, तो मैंने पाठ्यक्रम की शुरुआत सौंप दी है। यदि आप उस ग्रंथ सूची के पृष्ठ तीन को देखें तो वहां एक खंड है जिसका शीर्षक है "पुराने नियम के कथात्मक ग्रंथों का घरेलू उपयोग।" वहां सिडनी ग्रीडानस की दो प्रविष्टियाँ हैं। सबसे पहले मैंने आपको पढ़ने के लिए कहा था, और वह उनकी पुस्तक, *आधुनिक उपदेशक और प्राचीन पाठ का नौवां अध्याय था*, जिसमें हिब्रू कथा का उपदेश दिया गया था। मुझे लगता है कि यदि आप इसे पढ़ेंगे तो आप इस महत्व की कोई बात देखेंगे। उस पुस्तक और उस अध्याय में कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे मैं सहमत नहीं हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर इस विचार पर, और ऐतिहासिक आख्यान पर उपदेश देते हुए, आपको वहाँ कुछ उपयोगी सामग्री मिलेगी। सोला स्ट्रिक्टुरा में दूसरी प्रविष्टि : *ऐतिहासिक पाठ के उपदेश में समस्याएँ और सिद्धांत*। यह संक्षेप में उनका शोध प्रबंध है जो लगभग बीस साल पहले एमस्टर्डम के फ्री यूनिवर्सिटी में लिखा गया था, कुछ इस तरह। वहां उन्होंने उस बहस पर चर्चा की जिसका उल्लेख मैंने पिछले हफ्ते हॉलैंड में इन दो प्रकार के उपदेशों, अनुकरणीय बनाम मुक्तिदायक ऐतिहासिक पर किया था, और वह वापस जाते हैं और वह इन तरीकों पर विवाद पर बहुत सारे लेखों के साथ एक गहन बहस का विश्लेषण करते हैं। . और वह वॉल्यूम हमारी लाइब्रेरी में है। अगले दो सिर्फ लेख हैं, एक कार्ल टूमैन द्वारा और दूसरा सी. ट्रिम्प द्वारा जो समान मुद्दों को संबोधित करते हैं और एक मुक्तिदायक ऐतिहासिक दृष्टिकोण की वकालत करते हैं।

अंतिम प्रविष्टि में *माई गॉड इज़ याहवे नामक यह पुस्तक* एमबी वान ट वीर द्वारा लिखी गई है, जो एक डचमैन भी हैं, जो कुछ साल पहले हॉलैंड में उस बहस के मुक्तिदायक ऐतिहासिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह पुस्तक वास्तव में किंग्स में एलिय्याह कथा की चर्चा है, जैसा कि आप देखते हैं कि इसका उपशीर्षक कहता है, "धर्मत्याग के युग में एलिय्याह और अहाब।" मुझे लगता है कि यह काफी उपयोगी वॉल्यूम है। फिर, आप उसकी हर बात से सहमत नहीं हो सकते। और वह इन ग्रंथों में मुक्तिदायक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य कैसे पाया जाता है, इसके बारे में अपने कुछ विचारों को सामने लाने में काफी विस्तार में लगा है। मुझे नहीं लगता कि यह हमारी लाइब्रेरी में है। इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है और यशायाह प्रेस नामक कनाडाई प्रकाशक द्वारा प्रकाशित किया गया है। मुझे लगता है कि यह संभवतः ग्रेट क्रिश्चियन बुक्स में स्टोर के माध्यम से उपलब्ध है; यदि

आप उस वॉल्यूम को देखने में रुचि रखते हैं तो मुझे यह यहीं से मिला है। आज रात मैं जो करना चाहता हूँ वह आपको दृष्टिकोण का एक अंदाजा देने के लिए इन एलिजा कथाओं में से कुछ के उपचार में वानट वीर के कुछ विचारों को आकर्षित करना चाहता है।

डी. ओमरी का राजवंश 1. ओमरी 2. अहाब

... डी. एलिजा और एलीशा का कार्य

1. एलिजा की पहली उपस्थिति - 1 राजा 1-6 यदि आप हमारी रूपरेखा पर वापस जाते हैं, तो हम वहीं से शुरू करेंगे जहां हमने पिछले सप्ताह छोड़ा था। हम पृष्ठ दो के शीर्ष पर हैं "डी" है: "ओमरी का राजवंश।" और मैंने "1" "ओमरी" और वहां उप-बिंदुओं पर चर्चा की। "2" "अहाब" है, और मुझे लगता है कि मैंने वहां उसके व्यक्तित्व, उसके जीवन और बाल पूजा के खतरे पर चर्चा की। यह हमें "डी", "एलिय्याह और एलीशा के कार्य" तक ले आता है। और "1" है: "एलिय्याह की पहली उपस्थिति, 1 राजा 17:1-6।" तो उस बिंदु को उठाते हुए, आइए इस सामग्री को एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से देखें, यह मानते हुए कि आप इस सामग्री का उपयोग एक उपदेश विकसित करने के लिए करने का प्रयास कर रहे हैं। हम इसे सबसे पहले 1 राजा 17 के पहले पद के साथ करेंगे जहां आप पढ़ते हैं, "अब गिलाद के तिशाबी के एलिय्याह ने अहाब से कहा, 'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ जिसकी मैं सेवा करता हूँ, ओस नहीं पड़ेगी मेरे शब्दों के अलावा अगले कुछ वर्षों तक बारिश भी नहीं होगी।' अब वेन्ट वीर की उस पाठ की चर्चा में वह इस विषय का उपयोग करते हैं, "भगवान अपनी वाचा के प्रति वफादार हैं, तब भी जब उनके लोग वाचा को त्याग देते हैं।" दूसरे शब्दों में, वन्ट वीर के विचार में यह पाठ मूलतः हमसे यही कह रहा है। जब आप 1 राजा 17:1 में देखते हैं कि एलिय्याह अहाब का सामना करता है और कहता है, "इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ जिसकी मैं सेवा करता हूँ, मेरे वचन के बिना अगले कुछ वर्षों में न तो ओस होगी और न ही बारिश होगी," भगवान अपने प्रति वफादार हैं तब भी वाचा बाँधता है जब उसके लोग वाचा को त्याग देते हैं।

वानट वीर ने जो बात नोट की है वह अहाब का समय है और इज़ेबेल भी एलिय्याह का समय है। आप देखते हैं कि आयत 16 के अंत में हमें अहाब के बारे में बताया गया है और उसका

शासनकाल कितना दुष्ट था, और फिर अचानक जब आप 17:1 पर पहुँचते हैं, एलिय्याह लगभग कहीं से प्रकट होता है, और वह वहाँ है और वह अहाब का सामना कर रहा है। अतः अहाब का समय भी एलिय्याह का समय है। वानट वीर का सुझाव है कि इन दो आकृतियों, अहाब और एलिजा में, आपने एक विरोधाभास को मूर्त रूप दिया है। आप उस शब्द एंटीथिसिस से परिचित हैं। और यह विरोधाभास है जो बाइबिल के इतिहास में कई अभ्यावेदन में मौजूद है। आप इसे वास्तव में परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच विरोधाभास के रूप में पाते हैं। इसे इसके सबसे मौलिक रूप में देखें, ईश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच विरोधाभास। यह सत्य और त्रुटि, विश्वास और अविश्वास के बीच विरोधाभास है। आप उत्पत्ति 3 पर वापस जाएँ, और यह साँप के वंश और स्त्री के वंश के बीच है। जब हम अपने समय में आते हैं, तो यह चर्च और दुनिया के बीच विरोधाभास है। लेकिन यह वही लड़ाई है जो परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच चल रही है। तो इन आंकड़ों में आपके पास वह विरोधाभास है, और रेखा तेजी से खींची गई है। टकराव और लड़ाई होने वाली है।

अहाब का महत्व इसलिए पिछला अध्याय जहाँ अहाब को चित्रित किया गया है वह एक अंधकारमय तस्वीर प्रस्तुत करता है। लेकिन अब तस्वीर में एक नया तत्व है क्योंकि तस्वीर में एलिजा है। इज़राइल के इतिहास के साम्राज्य काल में इस विशेष समय के वर्णन को जगह दी गई है। अंतरिक्ष से मेरा तात्पर्य उस सामग्री की मात्रा से है जो इस विशेष समय के लिए समर्पित है। मुझे लगता है कि यह इस बात पर जोर देता है कि यह विरोधाभास मुक्ति के इतिहास में महत्वपूर्ण है क्योंकि अहाब का समय और अहाब का घर तुलनात्मक रूप से एक छोटी अवधि है, जब आप पुराने नियम की अवधि, या इज़राइल के राज्य काल को समग्र रूप से देखते हैं। . यह दाऊद से बन्धुवाई तक के समय के दसवें भाग से भी कम है। लेकिन उस समय का वर्णन 1 और 2 राजाओं की पुस्तकों का लगभग एक तिहाई है। आपके पास इस समयावधि का विस्तृत विवरण है। यह एक महत्वपूर्ण समय है. अहाब के दिनों में इस्राएल यहोवा को छोड़कर दूसरे देवताओं की ओर फिर गया। उन्होंने वाचा को त्याग दिया. यह उनके इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ है। इस इतिहास में अहाब का महत्व यह है कि उसने इज़राइल को एक चौराहे पर खड़ा किया और फिर जानबूझकर

उन्हें वास्तव में विनाश के रास्ते पर ले गया। बेशक, उसने उत्तरी साम्राज्य में शासन किया, लेकिन उसका प्रभाव उत्तरी साम्राज्य तक ही सीमित नहीं था। यदि आप 2 इतिहास 21:6 को देखें, तो आप वहां दक्षिणी साम्राज्य के यहूदा के राजा यहोराम के बारे में पढ़ते हैं: “वह इस्राएल के राजाओं के समान अहाब के घराने के समान चला। क्योंकि उसने अहाब की बेटी से विवाह किया। उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।” इस प्रकार अहाब का प्रभाव दक्षिण पर पड़ा। और यहोराम अहाब के घराने के मार्ग पर चला। उसकी पत्नी के रूप में अहाब की बेटी थी, और निःसंदेह, वह अठालिया थी, जो कम से कम संभवतः अहाब और इज़ेबेल की बेटी थी। यह कभी भी स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है। लेकिन बाद में आपको याद होगा कि अठालिया ने यहूदा में दाऊद की शाही वंशावली को मिटाने का प्रयास किया था और वह ऐसा करने में लगभग सफल हो गई थी, सिवाय प्रभु द्वारा उस वंशावली के संरक्षण के। इसलिए अहाब एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक महत्वपूर्ण समय है, लेकिन उस समय परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति वफादार है, तब भी जब उसके लोगों ने वाचा को त्याग दिया क्योंकि परमेश्वर ने एलिय्याह को भेजा था।

एलिय्याह ने जो किया वह उस विवाद का प्रचार करना था जो परमेश्वर का अपने लोगों के साथ था। उन्होंने सूखे का फैसला सुनाते समय ऐसा ही किया। तो आपके पास वह विषय है, ईश्वर अपनी वाचा के प्रति तब भी वफादार रहता है जब उसके लोग वाचा को त्याग देते हैं। हम देखते हैं कि कुछ तरीकों से सबसे पहले अहाब में वाचा का त्याग किया गया है।

अहाब का समन्वयवाद का पाप अहाब का पाप क्या था? मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि उसका पाप समन्वयवाद था। समकालिकता मूलतः प्रतिपक्षी को बनाए रखने में विफलता है। इसलिए हमने पहले ईश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच, सत्य और त्रुटि के बीच विरोधाभास के बारे में बात की थी। समकालिकता प्रतिपक्ष को बनाए रखने में विफलता है। अहाब एक धार्मिक शासक था। उसे एक संविदात्मक राजा माना जाता था। परन्तु उसने बाल और अशेरा को अपनी राजधानी सामरिया में, उत्तरी साम्राज्य में, प्रभु की पूजा के ठीक बगल में, आधिकारिक पूजा के लिए स्थान दिया। यह पहली आज्ञा का उल्लंघन है, "तुम्हारे पास मेरे सामने कोई अन्य देवता नहीं होगा।" और यदि आप पहली आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, तो आप वास्तव में सभी आज्ञाओं का उल्लंघन

करते हैं क्योंकि एक अर्थ यह है कि अन्य सभी आज्ञाएँ पहली आज्ञा पर टिकी होती हैं। तो वह वास्तव में पूरे कानून को रद्द कर देता है। उन्होंने उत्तरी साम्राज्य में बुतपरस्त पूजा की शुरुआत की।

उनका एक्शन उनसे पहले के किसी भी एक्शन से अलग था। आपने 1 राजा 16:30 में पढ़ा, "ओम्री के पुत्र अहाब ने यहोवा की दृष्टि में अपने पहिले के सब से अधिक बुरा काम किया।" आप सुलैमान के समय के बारे में सोच सकते हैं और इस अर्थ में कुछ समानता है कि सुलैमान का हृदय उसके शासनकाल के अंत में प्रभु से दूर हो गया था। उसने यरूशलेम में इन अन्य देवताओं के लिए मंदिर बनवाये। लेकिन एक अंतर है: यह उनके पूरे शासनकाल की विशेषता नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि वह धीरे-धीरे उसमें घुस गया है। यहां हमारे पास अहाब द्वारा नीति का एक सचेत विकल्प है।

लेकिन लगभग विडंबना यह है कि स्थिति को बदतर बनाने वाली बात यह है कि अहाब पूरे रास्ते जाने के लिए अनिच्छुक था। दूसरे शब्दों में, वह "प्रभु हमारे ईश्वर हैं" की स्वीकारोक्ति के आमूल-चूल उन्मूलन की इच्छा नहीं रखते थे। वह इस्राएल की स्वीकारोक्ति को "यहोवा हमारा परमेश्वर है" से "बाल और अशोरा हमारे देवता हैं" में बदलना नहीं चाहता था। वह यह चुनाव नहीं करना चाहता था। दूसरे शब्दों में, वह ऐसा विरोधाभास नहीं चाहता था जिसमें एक दूसरे को बाहर कर दे। वह दोनों चाहता था। वह यहोवा के बाद बाल को चाहता था। दूसरे शब्दों में, वह समन्वयवाद चाहता था। इस अर्थ में आप कह सकते हैं कि अहाब का रवैया शायद इज़ेबेल की तुलना में अधिक खतरनाक था। इज़ेबेल यहोवा की उपासना को मिटा देना चाहती थी। अहाब उन दोनों को अपने पास रखना चाहता था। मेरा मानना है कि यह अधिक भ्रामक और खतरनाक स्थिति है।

अतः समन्वयवाद का पाप अहाब का पाप था। समन्वयवाद परस्पर विरोधी मान्यताओं का मिलन है। समन्वयवाद उन रेखाओं को मिटाने का प्रयास करता है जो ईश्वर ने अपने लोगों के चारों ओर खींची थीं। और यदि आप इब्राहीम के समय के पुराने नियम के इतिहास में पीछे जाएँ, तो प्रभु ने वाचा के लोगों और अन्य लोगों के बीच एक रेखा खींची थी। याद रखें, उसने इब्राहीम को उसके लोगों से, उसके देश से, उनके देवताओं से दूर ले लिया। वह यहोशू 24, पद 2 और 3 है, और वह

इब्राहीम को एक नई भूमि पर ले आया और एक जीवित और सच्चे परमेश्वर, वाचा के परमेश्वर के साथ एक नए रिश्ते में ले आया। ऐसा इसलिए किया गया ताकि इब्राहीम का वंश अन्य लोगों और उनके देवताओं से अलग खड़ा रहे। इस्राएली परमेश्वर के विशेष लोग, उसकी अपनी निजी संपत्ति, याजकों का राज्य, एक पवित्र राष्ट्र बन गए। उन्हें एक माध्यम बनना था जिसके माध्यम से भगवान का मुक्ति कार्य पूरा किया जाएगा। अहाब ने उस रेखा को मिटाने की कोशिश की जो परमेश्वर ने अपने लोगों के चारों ओर खींची थी।

आधुनिक समन्वयवाद इसलिए मुझे लगता है कि उस परिप्रेक्ष्य से आप कह सकते हैं कि भगवान के लोगों को बुलाने का सिद्धांत तब भी, और अब भी, अपरिवर्तित है। तब और अब भी परमेश्वर के लोगों का आह्वान उस विरोधाभास को जीना है जो परमेश्वर के वचन ने दुनिया में रखा है। अब, आज हम धर्मतंत्र में नहीं रह रहे हैं, इसलिए परमेश्वर के लोगों और दुनिया के बीच विभाजन की रेखा आज राष्ट्रीय, जातीय या राजनीतिक रेखाओं के साथ नहीं खींची गई है जैसा कि पुराने नियम के काल में थी। फिर भी, परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य, परमेश्वर के लोग और जो नहीं हैं, उनके बीच की रेखा अभी भी मौजूद है। और समन्वयवाद का पाप अब भी होता है। यह एलिजा और अहाब के समय की तुलना में आज भिन्न रूप ले सकता है, लेकिन यह एक बहुत ही वास्तविक, वर्तमान समस्या है।

हम उस समय में रहते हैं जिसे हेगेलियन काल के बाद का समय कहा जाएगा। हेगेल एक जर्मन दार्शनिक थे जिन्होंने सीधे शब्दों में कहें तो तर्क दिया कि आपके पास एक थीसिस है; और फिर एक प्रतिपक्षी विकसित होती है और उसे एक संश्लेषण द्वारा हल किया जाता है जो फिर एक और प्रतिपक्षी बनाता है, और यह प्रक्रिया चलती रहती है। उस विचार का दार्शनिक अर्थ सापेक्षवाद था - आपके पास निरपेक्षता नहीं है। निरपेक्षता खत्म हो गई है, और हम ऐसे समय में रहते हैं जब पश्चिमी दुनिया की मानसिकता इस तरह के विचार से गंभीर रूप से प्रभावित है। यदि हम समकालिकता को ईश्वर द्वारा अपने लोगों के चारों ओर खींची गई रेखाओं को मिटाने के रूप में परिभाषित करते हैं, तो कोई निरपेक्षता नहीं है। मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से आज भी एक सतत समस्या है, चर्च और दुनिया के बीच, विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच यह पूरा अंतर है।

मुझे लगता है कि प्राचीन इज़राइल की तरह, हमें इस तथ्य पर ध्यान देना होगा कि हमें विरोधाभास को बनाए रखने और जिस तरह से हम रहते हैं और जिस तरह से हम अपने मूल्यों को बनाते हैं, इत्यादि में काम करने के लिए कहा जाता है। . हमें उन सीमाओं का सम्मान करना चाहिए जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए निर्धारित की हैं। हमें सत्य की बाइबिल अवधारणा और खींची गई रेखाओं को नहीं छोड़ना चाहिए। इसलिए परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति तब भी वफादार रहता है जब उसके लोग वाचा को त्याग देते हैं। वाचा का त्याग अहाब में वर्णित है।

परमेश्वर की वाचा की निष्ठा एलिय्याह में दिखाई देती है दूसरा, परमेश्वर की वाचा की निष्ठा एलिय्याह में दिखाई देती है। अहाब ने जिस पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व किया था, उस पृष्ठभूमि के विरुद्ध, अचानक यहाँ एलिय्याह अघोषित रूप से प्रकट होता है। इसमें कोई परिचय नहीं है, उसकी पृष्ठभूमि के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है, वह कहां से आया है। इसमें सिर्फ इतना लिखा है, "तिशबी एलिय्याह ने अहाब से कहा।" यह दिलचस्प है कि उसका नाम एलिय्याह अपने आप में एक उपदेश है। उसका नाम वास्तव में उसके जीवन का संदेश है क्योंकि "एलिजा" का अर्थ है "मेरा ईश्वर यहोवा है।" वन्ट वीर की पुस्तक का शीर्षक यही है: *माई गॉड इज याहवे*, एलिजा का यही मतलब है। खैर, मैं कहता हूँ कि उसका नाम वह मौलिक संदेश है जो एलिय्याह इस समय परमेश्वर के लोगों के लिए लाया था; यह था "प्रभु हमारा परमेश्वर है।" "मेरा ईश्वर यहोवा है," यही उसके नाम का अर्थ है। आप जानते हैं कि यदि आप हिब्रू में नाम के दो घटकों को अलग कर देते हैं, तो वास्तव में तीन होते हैं क्योंकि सर्वनाम प्रत्यय "ईश्वर," एल, "मेरा ईश्वर याहवे है।" तो नाम ही उसका संदेश है। और उसका नाम वह है जिसे इज़राइल को याद दिलाने की आवश्यकता है।

अब, हम यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि एलिय्याह की ताकत क्या थी? और मुझे लगता है कि हमारे ग्रंथों में इसका उत्तर यह होगा कि उसने ईश्वर की वाचा के प्रति निष्ठा की अपील की है। उसने परमेश्वर से वह करने के लिए कहा जो उसने पहले ही वादा किया था कि वह करेगा। उसने ईश्वर की निष्ठा की अपील की, ईश्वर से वह करने के लिए कहा जो उसने वादा किया था कि वह करेगा। एलिय्याह आता है और न्याय की घोषणा करता है, और न्याय वास्तव में वाचा के अभिशाप का अधिनियमन मात्र है।

व्यवस्थाविवरण की वाचा के अभिशापों से लिंक याद रखें जब वाचा स्थापित की गई थी, तो प्रभु ने कहा था, यदि तुम आज्ञाकारी हो तो निश्चित आशीर्वाद होंगे; यदि आप अवज्ञाकारी हैं, तो कुछ निश्चित श्राप होंगे। एलिय्याह वाचा और उसकी शर्तों से परिचित था। यदि आप व्यवस्थाविवरण 11:16 पर वापस जाते हैं, तो आप वहां पढ़ते हैं, "सावधान रहो, नहीं तो तुम बहककर पराये देवताओं की पूजा करने और उन्हें दण्डवत् करने के लिये प्रलोभित हो जाओगे। तब यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और वह आकाश को ऐसा बन्द करेगा कि मेंह न बरसेगा, और भूमि उपज न देगी।" वह व्यवस्थाविवरण 11:16 और 17 है।

व्यवस्थाविवरण 28:15-18: "यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की न माने, और उसकी सब आज्ञाएं और विधियां जो मैं आज तुझे सुनाता हूं उन को न माने, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे, और तुझ पर आ पड़ेंगे। नगर और देहात में तेरी निन्दा होगी। तुम्हारी टोकरी और आटा गूंथने का बर्तन शापित होगा। तेरे गर्भ का फल, और तेरी भूमि की उपज, और तेरे गाय-बैल, और तेरी भेड़-बकरी के बच्चे शापित होंगे। जब तुम भीतर जाओगे और जब बाहर जाओगे तब तुम शापित होंगे।"

और फिर श्लोक 22 में और उसके बाद वहाँ शापों की एक लंबी सूची है। जब आप श्लोक 22 पर आते हैं, तो यह कहता है, पहला बिंदु: "प्रभु तुम्हें हानि और बीमारी, बिजली और फफूंदी से मारेगा।" श्लोक 23: "तेरे सिर के ऊपर का आकाश पीतल का होगा। तुम्हारे नीचे की ज़मीन इस्त्री है। यहोवा तुम्हारे देश की वर्षा को धूल और चूर्ण में बदल देगा।" तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सूखा वाचा के अभिशापों में से एक था। एलिय्याह उससे परिचित था।

जेम्स 5:17 से हम जो सीखते हैं वह यह है कि एलिय्याह, जिसके बारे में हमें यहाँ 1 किंग्स 17 में नहीं बताया गया है, लेकिन जेम्स 5:17 कहता है कि "एलिजा ने प्रार्थना की कि बारिश न हो और अंतरिक्ष के लिए पृथ्वी पर बारिश न हो तीन साल और छह महीने का।" दूसरे शब्दों में, एलिय्याह की ताकत यह थी कि उसने परमेश्वर की वाचा की वफादारी की अपील की। उसने भगवान से वह करने को कहा जो उसने करने का वादा किया था, और वह है बारिश को रोकना। एलिय्याह की प्रार्थना विश्वास की प्रार्थना थी क्योंकि यह परमेश्वर के वचन पर आधारित थी। उन्होंने व्यवस्थाविवरण में उन शब्दों की पूर्ति के लिए प्रार्थना की। अब, मुझे लगता है कि इसमें हमें प्रार्थना की महान शक्ति

की याद दिलायी गयी है। जैसा कि जेम्स 5 कहता है, एक धर्मी व्यक्ति की विश्वासयोग्य, उत्कट प्रार्थना से बहुत लाभ होता है। वह एलिय्याह के बारे में बात कर रहा है। एलिय्याह ने यहां प्रार्थना की, और भगवान कार्य में आये। उन्होंने प्रार्थना की और सूखे का अनुरोध करते हुए भगवान की वाचा की वफादारी की अपील की।

उस प्रतिक्रिया में, प्रभु इसराइल को बाल की कमज़ोरी के विरुद्ध प्रभु की शक्ति का प्रदर्शन करेंगे, क्योंकि बाल एक प्रकृति देवता थे। हर अधिकार से, बारिश की घटना बाल के दायरे से संबंधित होनी चाहिए। फिर भी बाल शक्तिहीन था और बारिश नहीं ला सका। इस प्रकार लोगों को दिखाया गया कि यहोवा सच्चा परमेश्वर है।

प्रार्थना करो और काम करो

निःसंदेह, अब हम एलिय्याह से भिन्न समय में रहते हैं। हमारी परिस्थितियाँ भिन्न हैं। हालाँकि मुझे लगता है कि सिद्धांत रूप में हम कह सकते हैं कि हमारे पास अभी भी विरोधाभास को बनाए रखने का एक कार्य है, भगवान के लोगों के वफादार अवशेष को संरक्षित करने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं वह करने में, और हमारी ताकत वहीं मिलनी चाहिए जहां एलिय्याह थी। और यह, सबसे पहले, ईश्वर में विश्वासयोग्य वाचा का विश्वास रखना महत्वपूर्ण है। उसे भूलना आसान है।

लेकिन साथ ही, हमें यह भी याद रखना होगा कि प्रार्थना कार्य और कार्रवाई का विकल्प नहीं है। एक सुधार मॉडल है जो लैटिन में सुधार के समय तक जाता है। यह "ओरा एट लेबोरा" है, जिसका अर्थ है "प्रार्थना करें और काम करें।" आपने देखा कि एलिय्याह ने क्या किया। उसने अपनी प्रार्थना पर पैर रख दिये। यह हमें यहां 1 राजाओं में प्रार्थना के बारे में भी नहीं बताता है। हम इसके बारे में केवल जेम्स में सीखते हैं। परन्तु वह गया और उसने अहाब को एक सन्देश दिया। इसलिए 1 राजा 17:1 से याद रखें: ईश्वर अपनी वाचा के प्रति तब भी वफादार रहता है जब उसके लोग वाचा को त्याग देते हैं। परमेश्वर को उन लोगों की आवश्यकता है जो परमेश्वर के वचन की सच्चाई लाने के लिए एलिय्याह की पंक्ति में खड़े हों, ताकि बचे हुए लोगों को संरक्षित और मजबूत किया जा सके और सभी समन्वयवाद का विरोध किया जा सके। यह आज भी उतना ही सत्य है जितना एलिय्याह के दिनों में था। एलिय्याह की ताकत ईश्वर की वाचा की वफादारी के लिए एक अपील थी, और यही

हमारी ताकत है क्योंकि हम प्रार्थना करते हैं, काम करते हैं और आज इस विरोधाभास को बनाए रखते हैं। तो ये आई किंग्स से संपर्क करने के कुछ विचार हैं, अध्याय 17 का यह पहला श्लोक, मुक्तिदायक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से।

अब मैं इसके साथ और आगे बढ़ना चाहता हूँ जब हम अगले भाग पर जाएंगे। पद 2-6 में हम वहाँ पढ़ते हैं, “तब यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा, 'यहाँ से निकल, पूर्व की ओर मुड़, और यरदन के पूर्व केरीथ घाटी में छिप जा। तुम नाले का पानी पिओगे, और मैं ने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तुम्हें वहीं खिलाएं।" अतः उस ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उस से कहा था। वह यरदन के पूर्व केरीथ घाटी में गया और वहीं रहा। भोर को कौवे उसके लिये रोटी और मांस, और सांझ को रोटी और मांस लाते थे, और वह नाले से पानी पीता था।

2. एलिय्याह को छिपाना रहस्योद्घाटन का महत्व रखता है - केरिथ रेविन तो श्लोक 2-6 का विषय है: "एलियाह का छिपाना रहस्योद्घाटन का महत्व है।" अब हमने पद 1 में एलिय्याह के स्वरूप को देखा है। प्रभु के वचन के साथ एलिय्याह की उपस्थिति का भी रहस्योद्घाटन महत्व था। जैसा कि हमने अभी विकसित करने की कोशिश की, एलिय्याह की उपस्थिति एक रहस्योद्घाटन थी: यह विचार कि ईश्वर अपनी वाचा के प्रति वफादार है, तब भी जब उसके लोग वाचा को त्याग देते हैं। लेकिन अब आपके पास एलिय्याह का गायब होना, कम से कम किसी भी सार्वजनिक दृश्य से, और उसका छिपाव है। और यहां थीसिस यह है कि एलिय्याह का छिपना भी रहस्योद्घाटन का महत्व है।

ध्यान देने योग्य कई बातें: सबसे पहले, उसे छुपाने का आदेश दिया गया है। जब एलिय्याह श्लोक 1 में प्रकट हुआ, तो उसने वाचा के अभिशाप को साकार करने के लिए प्रार्थना करने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया और फिर इसके आने की घोषणा के साथ अहाब का सामना किया। जब हम पद 2 पर पहुंचते हैं, तो स्थिति अलग होती है क्योंकि यहां भगवान ने आदेश दिया है। आपने उस पहली कार्रवाई के संबंध में किसी भी आदेश के बारे में नहीं पढ़ा है, लेकिन यहां भगवान आदेश देते हैं। यह एक आदेश था, इसमें कोई संदेह नहीं, एलिय्याह ने जो संदेह किया होगा उससे बिल्कुल अलग। निस्संदेह उनमें लोगों को प्रभु के पास वापस बुलाने और सार्वजनिक मंत्रालय जारी

रखने की इच्छा थी। परन्तु परमेश्वर कहते हैं, जंगल में चले जाओ। इस प्रकार उसका जंगल में पीछे हटना और छिपना किसी भगोड़े का नहीं है। लेकिन यह भगवान के एक आज्ञाकारी सेवक का कार्य है। प्रभु कहते हैं, जाओ, यहां से चले जाओ, जॉर्डन के पूर्व केरीथ घाटी में छिप जाओ।

उनके मन में शायद कई सवाल उठे होंगे. क्या कोई भविष्यवक्ता विश्वासियों से अलग रहकर अपना कार्य पूरा कर सकता है? मुझे वहां क्या करना होगा? क्या उसका भविष्यसूचक कार्य समाप्त हो गया था? क्या उसे राजा को सूखे की घोषणा करने के लिए केवल एक छोटा सा शब्द कहने की अनुमति होगी? "मेरे कहने के बिना न तो ओस होगी और न ही बारिश होगी," लेकिन सवालों के बावजूद, आपने पद 5 में पढ़ा कि उसने वही किया जो प्रभु ने उससे कहा था। वह केरिथ घाटी के पास गया। अतः छिपाने का आदेश दिया गया है।

दूसरा उसका छिपाना एक रहस्योद्घाटन है। हम पूछ सकते हैं कि उन्हें क्यों भेजा गया? उसे लोगों से दूर कर दिया गया और लोगों से अलग कर दिया गया। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह उनकी सुरक्षा के लिए किया गया था। हमने बाद में पढ़ा कि ईज़ेबेल ने भविष्यवक्ताओं को सताया, लेकिन यह माउंट कार्मेल की घटनाओं के बाद है। आप कह सकते हैं कि अहाब के लिए उसे मारना मूर्खतापूर्ण होगा क्योंकि उसने कहा था कि उसके वचन के बिना बारिश नहीं होगी। यह केवल उनका शब्द था जो सूखे को समाप्त कर सकता था। उसे क्यों मारें? मुझे नहीं लगता कि यदि आप इस प्रश्न का उत्तर देते हैं कि उसे क्यों छुपाया गया था, तो सुरक्षा प्राथमिक स्पष्टीकरण थी। प्रभु ने उसकी रक्षा की होगी। यदि यही एकमात्र मुद्दा था, तो उसे ओबद्याह द्वारा क्यों नहीं रखा जा सकता था? याद रखें, अहाब के उत्पीड़न के समय ओबद्याह ने अन्य पैगम्बरों के इन समूहों की रक्षा की थी। इसलिए यह कोई वैध कारण नहीं लगता।

लेकिन यहां एलिय्याह को भगवान के लोगों से अलग कर दिया गया है, और फिर उसे भगवान के लोगों के सहयोग के बिना सीधे भगवान के हाथ से बनाए रखा जाएगा। दूसरे शब्दों में, उसे दूसरों द्वारा नहीं, बल्कि सीधे भगवान द्वारा कायम रखा जाएगा। मुझे लगता है कि यदि आप इस प्रश्न पर आगे विचार करें कि वह क्यों छिपा रहा है, तो एक अच्छी प्रतिक्रिया यह होगी कि उसका छिपाना एक रहस्योद्घाटन है, जैसा कि मैंने वहां नोट किया है। यह किस बात का रहस्योद्घाटन है? यह एक रहस्योद्घाटन है कि रहस्योद्घाटन बंद हो गया था। यह हमसे यही कह

रहा है। रहस्योद्घाटन बंद हो गया है। यहां एलिय्याह का कार्य, मुझे नहीं लगता, सामान्य रूप से आस्तिक के एक प्रकार या उदाहरण के रूप में देखा जाना चाहिए। एलिय्याह का एक विशेष कार्य था। वह एक भविष्यवक्ता थे। वह इस्राएल में परमेश्वर के वचन का वाहक था। जब वह केरीथ जाता है, तो यह सिर्फ जंगल में जाने वाला एक आस्तिक नहीं है। वह आस्तिक था, बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। यह परमेश्वर का वचन ही है जो समाप्त हो रहा है। परमेश्वर अपने प्रवक्ता को अपने ही लोगों के बीच से हटा रहा है। उनका छिपाना इस अर्थ में एक रहस्योद्घाटन था: उनका छिपाना हमें बताता है कि रहस्योद्घाटन बंद हो गया है। आप इसे रहस्योद्घाटन कह सकते हैं, लेकिन यहां इस शब्द का दो बार उपयोग किया जा रहा है: रहस्योद्घाटन कि रहस्योद्घाटन बंद हो गया है। उसका छिपाव बताता है कि ईश्वर अपने भविष्यवक्ता के माध्यम से अपने लोगों से बात करना बंद कर देगा। ताकि ईश्वर की चुप्पी, आप कह सकें, भविष्यवक्ता का निष्कासन निर्णय की पुष्टि और तीव्रता प्रदान करता है।

यहाँ यह सूखा है, और अब भगवान नहीं बोल रहे हैं और सब कुछ। भगवान निर्णय के माध्यम से ही बोल रहे हैं। तो जब परमेश्वर ने एलिय्याह को भेज दिया, तो क्या हुआ? परमेश्वर अपने लोगों को अपने वचन के प्रशासन से अलग कर रहा है। परन्तु यहोवा एलिय्याह को केरीथ नाले में भेजता है। वह लोगों से अलग-थलग है, लेकिन वह स्वयं परमेश्वर के वचन से लोगों की तरह अलग-थलग नहीं है क्योंकि परमेश्वर एलिय्याह के साथ संचार में रहता है, और वह एलिय्याह की परवाह करता है।

3. एलिय्याह के छिपने के दौरान उसके लिए परमेश्वर की देखभाल का महत्व तो आइए 3. “एलियाह के छिपने के दौरान उसके लिए परमेश्वर की देखभाल का महत्व” पर चलते हैं। अब यह यहीं है जहां आप अक्सर इस अनुच्छेद को अपने सभी बच्चों के लिए भगवान की देखभाल के उदाहरण के रूप में उपयोग करते हुए पाएंगे। तात्पर्य यह है कि ईश्वर अपने बच्चों को कभी भी भूख या प्यास से मरने नहीं देगा, बल्कि उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने कौवों को भेजेगा। इस प्रकार, केरिथ अपने लोगों के लिए ईश्वर की संभावित, चमत्कारी देखभाल का प्रतीक बन जाता है। मुसीबत के समय कौवे अप्रत्याशित मदद का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन इसके बारे में थोड़ा

सोचें. क्या यह इस पाठ के संदेश को समझने का उचित तरीका है? क्या बाइबल यह वादा करती है कि परमेश्वर अपने बच्चों को हमेशा भूख और प्यास से दूर रखेगा? मुझे नहीं लगता कि इस तरह का पाठ ईसाइयों के लिए बहुत मददगार है जो वास्तव में पीड़ित हैं - और कई लोगों ने किया है। बहुत से लोग ऐसी स्थिति में हैं जहां वे भूखे हैं और वे प्यासे हैं, और भगवान अपने कौवों को नहीं भेजते हैं। इसके अलावा, आप इस्राएल के उन 7,000 लोगों के बारे में क्या कहते हैं जिन्होंने बाल के सामने घुटने नहीं टेके थे और परमेश्वर के प्रति वफादार थे, और फिर भी सूखे और अकाल के समय में थे, और वे पीड़ित थे। वे भूखे थे, वे प्यासे थे। एलिय्याह के स्थान पर उन्हें एक उदाहरण के रूप में क्यों उपयोग नहीं किया जाता?

मुझे लगता है कि जब आप घटना को उसके संदर्भ में मुक्ति के इतिहास में रखते हैं, तो हमें एक बेहतर परिप्रेक्ष्य प्रदान किया जाता है। एलिय्याह एक भविष्यवक्ता है; एलिय्याह इस्राएल के लिए परमेश्वर के रहस्योद्घाटन का वाहक है। प्रभु उसे सम्भालते हैं क्योंकि उसका कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है। प्रभु ऐसा लोगों से स्वतंत्र रूप से करते हैं जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर का वचन लोगों पर निर्भर नहीं है। परन्तु लोग वचन पर निर्भर हैं। जिस सिद्धांत को आप वहां काम करते हुए देखते हैं, उसे हम पर भी इस अर्थ में लागू किया जा सकता है: कि जब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा, भगवान हमारी ज़रूरतों का ख्याल रखेंगे। वह इसे सामान्य तरीकों से या असाधारण तरीकों से कर सकता है, लेकिन जब तक हमारा काम पूरा नहीं हो जाता, भगवान हमारी ज़रूरतें पूरी करेंगे। लेकिन इसका उल्टा भी सच है। जब तक हमारी ज़रूरतें ईश्वर द्वारा पूरी की जाती हैं, तब तक हमें ईश्वर की सेवा में एक कार्य करना है। और जब वह कार्य पूरा हो जाएगा, तो परमेश्वर हमें अपनी इच्छानुसार किसी भी प्रकार ले जा सकता है। यह बीमारी, बुढ़ापे से हो सकता है, लेकिन यह अकाल से भी हो सकता है, शायद दुर्घटना से, विद्रोह से, या किसी भी कारण से। इसलिए एलिय्याह को गुप्त रूप से सुरक्षित रखने का अर्थ है कि उसका कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है।

4. एलिय्याह का छिपाना उसकी अपनी कमजोरी को प्रकट करता है और "एलिजा से भी महान" - यीशु मसीह की ओर इशारा करता है। चौथा, एलिय्याह का छिपाना उसकी अपनी कमजोरी को

प्रकट करता है और "एलिजा से भी महान" - यीशु मसीह की ओर इशारा करता है। मुझे लगता है कि हम देख सकते हैं कि एलिय्याह केवल प्रार्थना कर सकता है और फिर न्याय की घोषणा कर सकता है। उन्होंने वाचा के अभिशाप के लिए प्रार्थना की, इसके अधिनियमन की घोषणा की, लेकिन तब उनके पास कहने के लिए और कुछ नहीं था। वह वाचा के अभिशाप को रद्द नहीं कर सका। वह आज्ञाकारिता का आह्वान कर सकता था, लेकिन वह क्षमा या औचित्य प्रदान नहीं कर सकता था। वह इसमें असहाय है; वह निर्गमन में मूसा की तरह है जहां मूसा ने राष्ट्र से अभिशाप को हटाने के लिए लोगों की सजा खुद पर लेने का अनुरोध किया था। लेकिन ऐसा करना संभव नहीं था, ऐसा करने के लिए एलिय्याह से भी बड़ा व्यक्ति आवश्यक था। ताकि एलिय्याह ने वाचा के अभिशाप के तहत लोगों को परमेश्वर के वचन से अलग कर दिया। फिर भी उसने स्वयं गुप्त रूप से परमेश्वर के साथ संगति के आशीर्वाद का आनंद लिया।

ठीक है, चलो दस मिनट का ब्रेक लेते हैं।

ब्रियाना थॉमस और रेबेका ब्रुले
द्वारा प्रतिलेखित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन।
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया